"सब ऐक गोबिंद हैं"

1. एक अनेक बिआपक पूरक - जत देखउ तत सोई । माइआ चित्र बचित्र बिमोहित - बिरला बूझै कोई ।

अर्थः- एक परमात्मा अनेक रूप धार के हर जगह मौजूद है; मैं जिधर देखता हूँ, वह परमात्मा ही मौजूद है । पर (इस भेद को) कोई विरला आदमी ही समझता है, क्योंकि जीव आम तौर पर माया के रंग-बिरंगे रूपों में अच्छी तरह मोहे हुए हैं ।

सभ गोबिंद है सभ गोबिंद है - गोबिंद बिन नही कोई । सूत एक मण सत सहंस - जैसे ओत-पोत प्रभ सोई ।

अर्थः- हर जगह परमात्मा है, हर जगह परमात्मा है, परमात्मा से वचित (बची हुई) कोई जगह नहीं । जैसे एक धागा हो और (उसमें) सैकड़ों-हजारों मनके (परोए हुए हों) (इसी तरह सब जीवों में परमात्मा की ही जीवन-सत्ता मिली हुई है, जैसे) ताने पेटे में (धागे मिले हुए हैं, वैसे) वही परमात्मा (सब में मिला हुआ) है ।

जल तरंग अर फेन बुदबुदा - जल ते भिंन न होई । इहु परपंच पारब्रहम की लीला - बिचरत आन न होई ।

अर्थः- पानी की लहरें, झाग और बुलबुले- ये सारे पानी से अलग नहीं होते, वैसे ही ये दिखाई देता तमाशा-रूपी संसार परमात्मा की रची हुई खेल है, ध्यान से सोचने पर (ये समझ आ जाती है कि ये उससे) अलग नहीं है ।

मिथिआ भरम अर सुपन मनोरथ - सत पदारथ जानिआ । सुक्रित मनसा गुर उपदेसी - जागत ही मन मानिआ ।

अर्थः- ये परपंच देख के जीवों को गलत ख्याल बन गया है कि इस का हमारा साथ पक्का निभने वाला है; ये पदार्थ यूँ ही हैं जैसे सुपने में देखे हुए पदार्थ; पर जीवों ने इन्हें सदा (अपने साथ) टिके रहने वाला ही समझ लिया है । जिस मनुष्य को सतिगुरु भली समझ बख्शता है वह इस वहिम में से जाग पड़ता है और उसके मन को तसल्ली हो जाती है कि हमारा और इन पदार्थों का साथ सदा के लिए नहीं है ।

कहत नामदेउ हरि की रचना - देखहु रिदै बीचारी । घट-घट अंतर सरब निरंतर - केवल एक मुरारी । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 485)

अर्थः- नामदेव कहता हैः हे भाई ! अपने हृदय में विचार के देख लो कि ये परमात्मा की रची हुई खेल है, इसमें हरेक घट के अंदर हर जगह सिर्फ एक परमात्मा ही बसता है ।

a. जल-थल महीअल पूरिआ - सुआमी सिरजनहार । अनिक भांत होइ पसरिआ - नानक एकंकार । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 296)

अर्थः- सलोकुः हे नानक ! सारे जगत को पैदा करने वाला मालिक प्रभु जल में, धरती में और आकाश में भरपूर है, वह एक अकाल-पुरख अनेक ही तरीकों से (जगत में हर जगह) बिखरा हुआ है,।

2. आनीले कुमभ भराईले ऊदक - ठाकुर कउ इसनान करउ। बइआलीस लख जी जल मह होते - बीठल भैला काइ करउ।

अर्थः- घड़ा ला के (उस में) पानी भरा के (अगर) मैं मूर्ति को स्नान कराऊँ (तो वह स्नान स्वीकार नहीं, पानी झूठा है, क्योंकि) पानी में बयालिस लाख (जूनियों के) जीव रहते हैं । (पर मेरा) निर्लिप प्रभु तो पहले ही (उन जीवों में) बसता था (और स्नान कर रहा था, तो फिर मूर्ति को) मैं किस लिए स्नान करवाऊँ ?

जत्र जाउ तत बीठल भैला । महा अनंद करे सद केला ।

अर्थ:- मैं जिधर जाता हूँ, उधर ही निर्लिप प्रभु मौजूद है सब जीवों में व्यापक हो के बड़े आनंद-चोज-तमाशे कर रहा है ।

आनीले फूल परोईले माला - ठाकुर की हउ पूज करउ । पहिले बास लई है भवरह - बीठल भैला काइ करउ ।

अर्थ:- फूल ला के और उसकी माला परो के अगर मैं मूर्ति की पूजा करूँ (तो वह फूल झूठे होने के कारण वह पूजा स्वीकार नहीं, क्योंकि उन फूलों की) सुगंधि तो पहले भौरे ने ले ली; (पर मेरा) बीठल तो पहले ही (उस भौरे में) बसता था (और सुगंधि ले रहा था, तो फिर इन फूलों से) मूर्ति की पूजा मैं किस लिए करूँ ?

आनीले दूध रीधाईले खीरं - ठाकुर कउ नैवेद करउ । पहिले दूध बिटारिओ बछरै - बीठल भैला काइ करउ ।

अर्थ:- दूध ला के खीर पका के अगर मैं यह खाने वाला उत्तम पदार्थ मूर्ति के आगे भेटा रखूँ (तो दूध झूठा होने के कारण भोजन स्वीकार नहीं, क्योंकि दूध दूहने के समय) पहले बछड़े ने दूध झूठा कर दिया था; (पर मेरा) बीठल तो पहले ही (उस बछड़े में) बसता था (और दूध पी रहा था, तो इस मूर्ति के आगे) मैं क्यों नैवेद भेटा करूँ ?

ईभै बीठल ऊभै बीठल - बीठल बिन संसार नही । थान थनंतर नामा प्रणवै - पूर रहिओ तूं सरब मही । (485)

अर्थ:- (जगत में) नीचे ऊपर (हर जगह) बीठल ही बीठल है, बीठल से वचित जगत रह ही नहीं सकता। नामदेव उस बीठल के आगे विनती करता है: (हे बीठल!) तू सारी सृष्टि में हर जगह पर भरपूर है ।

a. सभै घट राम बोलै रामा बोलै । राम बिना को बोलै रे ।

अर्थ:- हे भाई ! सारे घटों (शरीरों) में परमात्मा बोलता है, परमात्मा ही बोलता है, परमात्मा के बिना और कोई नहीं बोलता ।

एकल माटी कुंजर चीटी - भाजन हैं बहु नाना रे । असथावर जंगम कीट पतंगम - घट-घट राम समाना रे ।

अर्थ:- हे भाई ! जैसे एक ही मिट्टी से कई किस्मों के बर्तन बनाए जाते हैं, वैसे ही हाथी से ले के कीड़ी तक, निर्जीव और सजीव जीव, कीड़े-पतंगे हरेक घट में परमात्मा ही समाया हुआ है ।

एकल चिंता राख अनंता - अउर तजहु सभ आसा रे । प्रणवै नामा भए निहकामा - को ठाकुर को दासा रे । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 988)

अर्थ:- हे भाई ! और सबकी आशा छोड़, एक बेअंत प्रभु का ध्यान धर (जो सबमें मौजूद है) । नामदेव विनती करता है: जो मनुष्य (प्रभु का ध्यान धर के) निष्काम हो जाता है उसमें और प्रभु में कोई भिन्न-भेद नहीं रह जाता ।

b. घट-घट मै हरि जू बसै - संतन कहिओ पुकार । कहु नानक तिह भज मना - भउ निध उतरह पार । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1427)

अर्थ:- हे नानक ! कह: हे मन ! संत जनों ने ऊँचा-ऊँचा पुकार के बता दिया है कि परमात्मा हरेक शरीर में बस रहा है । तू उस

(परमात्मा) का भजन किया कर, (भजन की इनायत से) संसार-समुंदर से तू पार लांघ जाएगा ।

८. कोई पड़ता सहसाकिरता - कोई पड़ै पुराना । कोई नाम जपै जपमाली - लागै तिसै धिआना । अब ही कब ही किछू न जाना - तेरा एको नाम पछाना । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 876)

अर्थः- हे प्रभु ! (तेरा नाम बिसार के) कोई मनुष्य मगधी प्राक्रित में लिखे हुए (संस्कृत के) बौध व जैन ग्रंथ पढ़ रहा है, कोई (तुझे भुला के) पुराण आदि पढ़ता है, कोई (किसी देवी-देवते को सिद्ध करने के लिए) माला से (देवते के) नाम का जाप करता है, कोई समाधि लगाए बैठा है । पर हे प्रभु ! मैं सिर्फ तेरे नाम को पहचानता हूँ (तेरे नाम से ही सांझ डालता हूँ), मैं कभी भी (तेरे नाम के बिना) कोई और उद्यम (ऐसा) नहीं समझता (जो आत्मिक जीवन को ऊँचा कर सके) ।

३. कोई बोलै राम-राम - कोई खुदाइ । कोई सेवै गुसईआ - कोई अलाह ।

अर्थः- हे भाई ! कोई मनुष्य (परमात्मा का नाम) 'राम राम' उचारता है, कोई उसको 'ख़ुदाय खुदाय' कहता है । कोई मनुष्य उसको 'गोसाई' कह के उसकी भक्ति करता है, कोई 'अल्ला' कह के बँदगी करता है ।

कारण करण करीम । किरपा धार रहीम ।

अर्थः- हे सारे जगत के मूल ! हे बख्शिंद ! हे कृपालु ! हे रहम करने वाले ! (जीवों ने अपनी-अपनी धर्म-पुस्तकों की बोली के अनुसार तेरे अलग-अलग नाम रखे हुए हैं, पर तू सबका सांझा है) ।

कोई नावै तीरथ - कोई हज जाइ । कोई करै पूजा - कोई सिर निवाइ ।

अर्थः- हे भाई ! कोई मनुष्य किसी तीर्थ पर स्नान करता है, कोई मनुष्य (मक्के) हज करने के लिए जाता है । कोई मनुष्य (प्रभु की मूर्ति बना के) पूजा करता है, कोई नमाज़ पढ़ता है ।

कोई पड़ै बेद - कोई कतेब । कोई ओढै नील - कोई सुपेद।

अर्थः- हे भाई ! कोई (हिन्दू) वेद आदि धर्म-पुस्तक पढ़ता है, कोई (मुसलमान आदि) कुरान अंजील आदि पढ़ता है । कोई (मुसलमान हो के) नीले कपड़े पहनता है, कोई (हिंदू) सफेद वस्त्र पहनता है ।

कोई कहै तुरक - कोई कहै हिंदू । कोई बाछै भिसत - कोई सुरगिंदू ।

अर्थः- हे भाई ! कोई मनुष्य कहता है 'मैं मुसलमान हूँ', कोई कहता है 'मैं हिन्दू हूँ' । कोई मनुष्य (परमात्मा से) बहिष्त माँगता है, कोई स्वर्ग मांगता है ।

कह नानक जिन हुकम पछाता । प्रभ साहिब का तिन भेद जाता । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - ८८५)

अर्थ:- हे नानक ! कहः जिस मनुष्य ने परमात्मा का हुक्म पहचाना है, उसने मालिक प्रभु का भेद पा लिया है (कि उसे कैसे प्रसन्न किया जा सकता है) ।

a. बन तिन परबत है पारब्रहम । जैसी आगिआ तैसा करम ।
पउण पाणी बैसंतर माह । चार कुंट दह दिसे समाह । (294)

अर्थ:- वह पारब्रहम जंगल में है, घास (आदि) में है और पर्वत में है; जैसा वह हुक्म करता है, वैसा ही (जीव) काम करता है । पवन में, पानी में, आग में चहुँ कुंटों में दसों दिशाओं में (सब जगह) समाया हुआ है ।

b. जीवन मै जल मै थल मै सभ रूपन मै सभ भूपन माही ।
सूरज मै सस मै नभ मै जह हेरौ तहा चित लाइ तहा ही ।

अर्थ:- वह ईश्वर है समस्त प्राणियों में, जल में, पृथ्वी में, समस्त रूपों में तथा समस्त राजाओं में, सूर्य में, चन्द्रमा में, आकाश में, जहाँ भी देखो, वहाँ चित रखकर (प्राप्त किया जा सकता है) ।

पावक मै अर पौन हूँ मै पृथवी तल मै सु कहा नह जाही ।
ब्यापक है सभ ही के बिखै कछु पाहन मै परमेस्वर नाही ।
(दसम ग्रंथ - 1192)

अर्थ:- अग्नि में, वायु में, पृथ्वी पर, (और वह) कौन सी जगह नहीं है । (वह) सर्वव्यापी है, केवल पत्थरों में ईश्वर नहीं है ।

c. जले हरी । थले हरी । उरे हरी । बने हरी ।

अर्थः- प्रभु जल में हैं ! प्रभु धरती पर हैं ! प्रभु हृदय में है ! प्रभु वन में हैं !

गिरे हरी । गुफे हरी । छिते हरी । नभै हरी । (दसम ग्रंथ - 13)

अर्थः- प्रभु पहाड़ों में है ! प्रभु गुफा में हैं ! प्रभु पृथ्वी पर है ! प्रभु आकाश में है !

(पाठी माँ साहिबा)

»»» हक ««« »»» हक ««« »»» हक «««

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"